वक्तव्य: 05 (ईहामृग और अंक)

7. ईहामृग :- अभीनवभारतीकार ने इसकी व्युत्पत्ति इस प्रकार दी है

ईहा (ईह+अ+टाप) चेष्टा मृगस्येव स्त्रीमात्रार्था यत्र स ईहामृगः

अर्थात् जहाँ नायक मृग की भांति एक-मात्र स्त्रीप्राप्ति में ही तत्पर रहे वह ईहामृग कहलाता है ।
साहित्यदर्पण के अनुसार-

ईहामृगो मिश्रवृत्तश्चतुरङ्क प्रकीर्तितः ।
मुखप्रतिमुखे सन्धि तत्र निर्वहणं तथा ॥
नरदिव्यावनियमौ नायकप्रतिनायकौ ।
ख्यातौ धीरोद्धतावन्यो गूढमावादयुक्तकृत् ॥
दिव्यास्त्रियमनिच्छन्तीमपहारादिनेच्छतः ।
शृङ्गामासमप्यस्य किञ्चित्किञ्चित्प्रदर्शयेत् ॥
पताकानायका दिव्या मर्त्या वापि दशोद्धताः ।
युद्धमानीय संरम्भं परं व्याजान्निवर्तते ॥
महात्मानो वधप्राप्ता अपि वध्याः स्युरत्रनो ।
एकाङ्को देव एवात्र नेतेत्याहुः परे पुनः ॥
दिव्यस्त्रीहेतुकं युद्धं नायकाः षड्द्वितीतरे ।¹¹

अर्थात् ईहामृग का इतिवृत्त एतिहासिक और कल्पित का मिश्रण होता है । चार अंक होते हैं ।

¹¹ . साहित्यदर्पण, 6/245-249.1/2

-मुख, प्रतिमुख व निर्वहण ये तीन ही सन्धियाँ होती हैं।

-नायक और प्रतिनायक दोनों में से कोई भी देव व मानव हो सकता है। ये प्रख्यात व धीरोद्धत हों।

प्रतिनायक प्रच्छन्न आचारवाला और अनिचित कर्मों में तत्पर रहें। प्रतिनायक के आश्रय से शृंगार रस की अभिव्यंजना होती है। प्रतिनायक के प्रेम की अनिच्छुक किसी दिव्यांगना का अपहरण वर्णित होता है।

- इसका पताकानायक 10 होते हैं जो दिव्य अथवा मानव दोनों हो सकते हैं।
- यहाँ प्रतिनायक का बल, युद्धस्थान में प्रदर्शित करके, किसी न किसी बहाने, समाप्त कर दिया जाता है। वधयोग्य भी लोगों के वध का वर्णन नहीं किया जाता।
- अन्य आचार्य ईहामृग के लिये एक अङ्क ही स्वीकार करते हैं। तथा कुछ का मानना है कि ६ नायक परस्पर किसी दिवाङ्गना के लिये लड़ते-झगड़ते हैं।

नोट :- ईहामृग को ईहामृग इसलिये कहते हैं कि क्योंकि नायक मृग की भांति ऐसी नायिका की ईहा करता है जो अलभ्य होती है।

-ईहामृग का उदाहरण - कुसुमशेखरविजयम्।

-प्रतिनायक से आशय लोभी, धीरोद्धत, अहंकारी, जिद्दी, पापी, व्यसनी तथा मुख्य नायक कृ शत्रु से है।

-धीरोद्धत नायक वही होता है, जो अत्यधिक घमण्ड और ईर्ष्या से युक्त हो, माया और कपटा से परिपूर्ण, अहङ्कारी, चञ्चल, क्रोधी तथा स्वयं की क्षाघ्रा करने वाला हो।

-कारिका में मिश्र शब्द ऐतिहासिक एवं कल्पित दोनों इतिवृत्तों के लिये आया है।

८-अङ्क :- दशरूपक व "अवलोक वृत्त" लिखने वाले धनिक ने अङ्क को उत्सृष्टिकाङ्क कहा है। क्योंकि वे नाट्याकान्तर्गत प्रयुक्त अङ्क से इसका भेद स्पष्ट करना चाहते थे। अभिनवभारती में इसकी व्युत्पत्ति निम्न है -

"उत्क्रमणीया सृष्टिर्जीवितं प्राणा मासां वा उत्सृष्टिकाः शोचन्त्यः स्त्रियस्ताभिरङ्कित इति तथोक्तः।

धनिक ने अन्य रूपप्रकारों से उल्टी सृष्टि की वजह से इसे उत्सृष्टिकाङ्क कहा है। विश्वनाथ ने निम्न लक्षण दिया है -

उत्सृष्टिकाङ्क एकाङ्कों नेतारः प्राकृता नराः ॥

रसोऽत्र करुणः स्थायी बहुस्त्रीपरिदेवितम्।

प्रख्यातमिति वृत्तं च कविबुद्ध्या प्रपञ्चयेत् ॥

भाणवत्सन्धिवृत्त्यङ्गान्यास्मिञ्जयपराजयौ ।

युद्धं च वाचा कर्त्रव्यं निर्वेदवचनं बहु ॥¹²

अर्थात् अङ्क वह है ,जिसमें एक ही अङ्क हो ।

साधारण पुरुष नायक हो । करुण रस अङ्गरस हो ।

नारी-विलाप का प्रचुर मात्रा में वर्णन हो ।

इतिवृत्त प्रख्यात हो तथा नाटककार की कल्पना द्वारा विस्तार को प्राप्त हो ।

इसमें सन्धि, वृत्ति तथा अङ्गो की योजना भाण के समान हो ।

इसमें जय-पराजय, युद्ध-नियुद्ध आदि वाणी द्वारा प्रकट किया जाये ।

इसमें निर्वेद प्रायः वचनों का बाहुल्य हो ।

नोट -

उदाहरण - शर्मिष्ठायातिः ।

- मुख एवं निर्वहण सन्धियाँ आवश्यक है ।
- केवक भारती वृत्ति का प्रयोग होता है ।
- दसों लस्याङ्गों का उपन्यास यहां किया जाता है ।